Nyayavatara

Folder No.	022439
Granth Name	Nyayavatara
Author	Manikyasagarsuri
Publisher	Agmoddharak Granthmala
Edition	1
Year	1965
Pages	180

न्यायावतार

फोल्डर नं.	०२२४३९
ग्रन्थ	न्यायावतार
लेखक	माणिक्यसागरसूरि
प्रकाशक	आगमोद्धारक ग्रंथमाला
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९६५
पृष्ठ	१८०

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय निवेदन ---------- १
अवतरणिका ---------- ३
विषयानुक्रमणिका ---------- ५
शुद्धिपत्रकम् ---------- १५
उपक्रम अनुबन्धचतुष्कनिर्देशश्च ---------- १
शाब्दप्रमाणस्वरूपम् ---------- १२
पक्षप्रयोगोपपत्तौ साध्यसिद्धिदोषापत्तिप्रदर्शनम् ---------- २२
त्रिविधहेत्वाभासलक्षणानि दृष्टान्तद्वारालक्षणसङ्गति ---------- ३२
सर्वज्ञत्वसिद्धइ ---------- ४५
यथार्थश्रुतलक्षणम् ---------- ६८
आत्मन कर्तृत्वसिद्दि ---------- ८१
प्रमाणानामनादिव्यवस्थां निरूप्योपसंहार ---------- ११३
ईश्यरवादे नानासङ्गतिनिरूपणण् ---------- १२७
भूतानामचेतनत्वात् विनेश्वरं कथ जगद्व्यवस्थेति ---------- १४२
ग्रन्थकर्तुः गरिमास्पदमहिमासूचकप्रमाणोपन्यास ---------- १५६